Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 01, No. 08, October. 2024

अनकहा दर्द : तवादर्शने

डॉ.अरुण कुमार निषाद
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, कटकाखानपुर, द्वारिकागंज, सुल्तानपुर

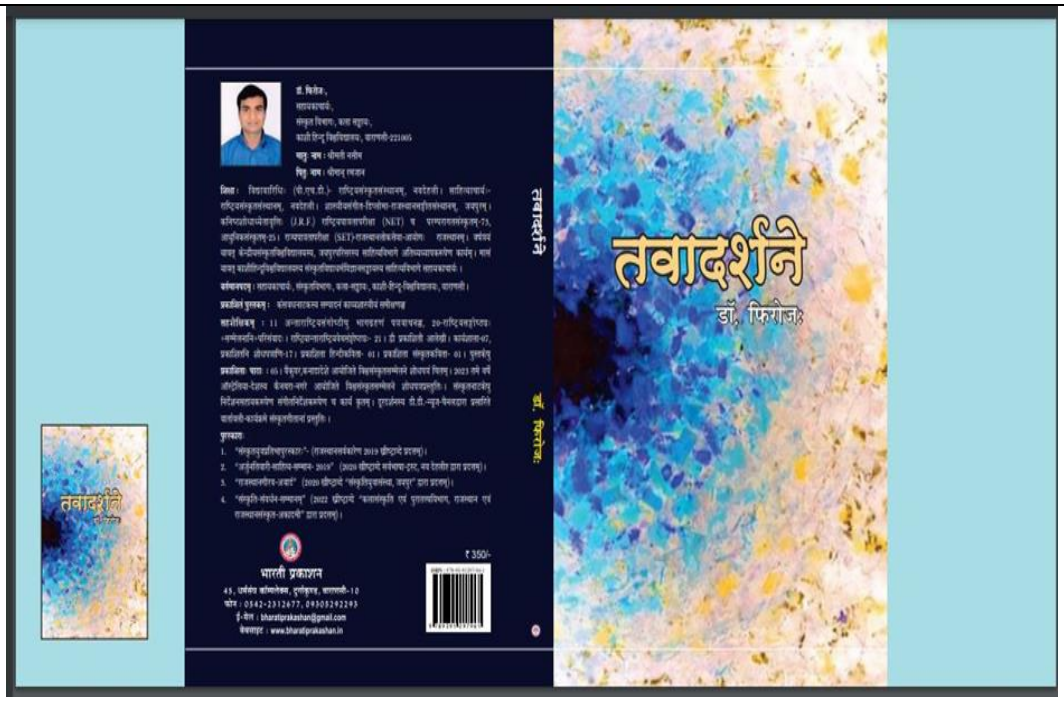

प्रतिभा किसी चीज की मोहताज नहीं होती| यह अपनी सुगन्ध फैलाकर ही रहेगी | संस्कृत की इसी सुगन्ध को फैला रहें हैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ.फिरोज जी | डॉ.फिरोज कवि के साथ-ही-साथ संगीत की भी अच्छी पकड़ रखते हैं | अभी हाल ही में (सन् 2023 ई.) उनका प्रथम काव्य 'तवादर्शने' भारती प्रकाशन वाराणसी से प्रकाशित होकर आया है | इसमें 110 पद्य हैं | इन पद्यों का हिन्दी अनुवाद स्वयं कवि का है | इसमें 110 पद्य हैं | यह भारती प्रकाश वाराणसी से सन् 2023 ई. में प्रकाशित है | इसका अंकित मूल्य 350 रूपया है | पृष्ठ संख्या 82 | ISBN- 978-93-91297-96-1

डॉ.फिरोज लिखते हैं कि-हे प्रिये! तेरे नहीं दिखने पर मेरी मुस्कान भी दूर हो जाती है |

मदीयं स्मितं वैखरी वाचि रम्या

मदीक्षा भवेयु: सदा सार्थवत्य: |

मदीयौ करौ चित्रकर्मादिदक्षौ

तवादर्शने शून्यतामेव यान्ति ||14|| पृष्ठ 13

डॉ.फिरोज जी आगे लिखते हैं कि-गीत-संगीत, आमोद-प्रमोद सब कुछ तेरे न दिखने पर शून्य हो जाते हैं |

कुबेरस्य रम्यालका सज्जिता सा-

प्सरोवृन्दभावै: सुरागै: सुवाद्यै: |

जना नन्दितास्तत्र वासं विधाय

तवादर्शने शून्यतामेव यान्ति ||19|| पृष्ठ 15

इसी भाव भूमि का देवमणि पाण्डेय का एक शेर है-

महक कलियों की फूलों की हँसी अच्छी नहीं लगती

तुम्हारे बिन हमें ये ज़िन्दगी अच्छी नहीं लगती ||

वे लिखते हैं कि-नया साल, चाँदनी रात, पूर्णिमा की शीतलता व मनोहारिता कुछ भी तेरे बगैर रुचिकर नहीं होता है |

नवो वत्सरो जीवितन्नूतनञ्च

सरो नूतनन्नूतना कापि वापी |

नवेन्दुर्वर: शीतल: पूर्णिमाया:

तवादर्शने शून्यतामेव यान्ति ||22|| पृष्ठ 17

इसी भाव से मिलता-जुलता विजेन्द्र सिंह परवाज का एक शेर है-

जो तू नहीं तो ये दुनिया रुकी-रुकी सी लगे |

मैं अपनी शकल भी देखूँ तो अजनबी सी लगे ||

डॉ.फिरोज जी लिखते हैं कि- हे प्रिये! तेरे नहीं दिखने पर यह तीज-त्यौहार सब मेरे लिए बेकार हैं |

सुदीपोत्सवो होलिका रङ्गपूर्णा

बिहू पोंगलेदोत्सवा हर्षसिक्ता: |

शुभा लोहड़ी तीजपर्वादयश्च

तवादर्शन शून्यतामेव यान्ति ||33|| पृष्ठ 25

डॉ.फिरोज जी लिखते है कि- तेरे न दिखाई देने पर मेरा भूत, भविष्य, वर्तमान सब अंधकारमय हो गया है |

अतीत: सुवर्णं महान् मे स काल:

हसन् वर्तमानो ललामो विशाल: |

भवेद् भाविदिव्यं मदीयं समस्तं

तवादर्शने शून्यतामेव यान्ति ||68|| पृष्ठ 49

यहाँ शकील बदायूँनी का एक शेर याद आता है कि-

लम्हा-लम्हा बार है तेरे बग़ैर

ज़िन्दगी दुश्वार है तेरे बग़ैर ||

मुझे आशा ही ही पूर्ण विश्वास है कि- मित्रवर डॉ.फिरोज जी की यह प्रथम काव्यकृति (तवादर्शने) संस्कृत कविजगत् में उनकी पहचान बनाने में पूर्णरूपेण समर्थ है | युवाकवि डॉ.फिरोज जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ